धर्म

एकमात्र उपाय

ओशो

एक बार यह अग्निदत्त अपने शिष्यों सहित श्रावस्ती के पास विहार कर रहा था और भगवान बुद्ध भी श्रावस्ती में विराजमान थे। तो भगवान ने अपने एक प्रमुख शिष्य मौद्गलायन को बुलाकर कहा— मौद्गलायन भगवान के जीते जी संबोधि को उपलब्ध हो गया था; वह परमज्ञान को उपलब्ध हो गया था— तो उन्होंने मौद्गलायन को बुलाकर कहा कि जाओ इस बेचारे अग्निदत्त को भी जगाओ! फिर अगर जरूरत पड़ी तो मैं भी आऊंगा। तो मौद्गलायन गए।

लेकिन सोयों को जगाना इतना आसान तो नहीं। फिर सोए हुए पंडित हों तो और भी मुश्किल है। और फिर उनके पास शिष्यों की भीड़ हो तब तो फिर करीब— करीब असंभव है। लेकिन भगवान ने कहा तो मौद्गलायन गए। अग्निदत्त ने तो उनमें जरा भी रुचि न ली। उसने तो उनसे बैठने को भी न कहा। वह तो विवाद पर तैयार हो गया। वह तो विवाद करने न आए थे। वह तो कोई संदेश देने आए थे लेकिन वह संदेश सुनने को भी राजी न था। ऐसे बातचीत में रात हो गयी तो मौद्गलायन ने कहा कि मुझे कम से कम रात तो आपके आश्रम में रुक जाने दें। लेकिन अग्निदत्त ने कहा इस आश्रम में इस तरह के लोगों के रुकने की कोई संभावना नहीं। तुम भ्रष्ट हो और तुम दूसरों को भ्रष्ट करना चाहते हो।

एक बुद्धपुरुष को भी देखकर पंडित पहचान न सका, पंडित की आंखें ऐसी अंधी होती हैं। शास्त्रों से इतनी भरी होती हैं कि सामने ज्योति खड़ी हो तो भी दिखायी नहीं पड़ती। मजबूरी थी तो मौद्गलायन पास में ही बालुका की एक राशि पर नदी के किनारे जाकर सो रहे। ठंडी रात थी। और अग्निदल और उसके शिष्य बड़े प्रसन्न हुए क्योंकि उस बालुका राशि पर कोई जाता नहीं था वहां एक नागराज का निवास था। और वह नागराज बड़ा खतरनाक था। और आदमी वहां पहुंच जाए तो खतम ही जिंदा वहां से कोई लौटता नहीं था। तो उन्होंने सोचा चलो झंझट टली! और यह भी कैसे आदमी को बुद्ध ने भेजा जिसको इतना भी बोध नहीं है कि कहां सोने जा रहा है! यहां मौत आएगी।

सुबह तो जल्दी— जल्दी शिष्य उठे अग्निदल के और देखने गए कि देखें मरा हुआ पड़ा होगा बेचारा! वहां जाकर देखे तो चकित हो गए। वह तो ध्यान लगाए बैठे हैं और नागराज अपना फन उनके ऊपर किए रक्षा कर रहा है। चकित! भागे सभी शिष्य। अग्निदत्त अकेला रह गया अपने आसन पर बैठा। उसे बड़ा बुरा भी लगा बड़ी ग्लानि भी हुई और उत्सुकता भी जगी वह भी देखना चाहता था— था तो वैसा ही जैसे बच्चे होते हैं कोई बोध तो उसे था नहीं। उत्सुकता कुतूहल वह भी पीछे से आया। चुपचाप आकर देखा हुआ चमत्कृत! मौद्गलायन को देखकर जो जरा भी प्रभावित न हुआ था वह भी इस चमत्कार को देखकर प्रभावित हुआ। मूढ़ों के प्रभावित होने के अपने ढंग होते हैं। सारे शिष्य मौद्गलायन के चरणों में गिर पड़े। खैर अग्निदत्त इतनी हिम्मत तो नहीं किया लेकिन दुखी बहुत हुआ। नाराज भी बहुत मन में हुआ कि ये शिष्य उसके चरण में हक रहे हैं। तभी बुद्ध का आगमन हुआ। जब बुद्ध आकर खड़े हो गए मौद्गलायन ने आंखें खोली वह उनके चरणों में गिरा— मौद्गलायन अपने गुरु के चरणों में गिरा। तब तो शिष्य बडे हैरान हुए। उन्होंने कहा कि जब यह शिष्य इतना चमत्कारी तो इसके गुरु का क्या कहना! वे सब बुद्ध के चरणों में गिरे।

अग्निदत्त ने डरते— डरते बुद्ध से पूछा कि यह चमत्कार क्या है? बुद्ध ने कहा कि यह चमत्कार दूसरी तरफ से सोचो इससे भी बड़ा चमत्कार हुआ कि तुम मनुष्य हो और न पहचान सके और सर्प ने पहचान लिया। इधर सोचो। आदमी कैसा गया—बीता हो सकता है! पशु पहचान लेता है कभी—कभी, क्योंकि पशु निर्मल होता है, निर्दोष होता है। पशु को न तो वेद मालूम हैं, न पुराण मालूम हैं; न पशु हिंदू है, न मुसलमान है, न ईसाई है, पशु सरल है। यह नाग भी पहचान सका। यह तरंग जो मौद्गलायन के आसपास है, यह नाग भी पहचान सका। और अक्सर नाग पहचान लेते हैं। इस बात को तुम चमत्कार ही मत समझना, यह कोई पहली दफे घटी घटना नहीं है, यह भारत में बहुत दफे घटी है। बहुत से जैन तीर्थंकरों के साथ घटी है। यह बहुत बार घटी है। नाग में कुछ खूबियां हैं!

तुम चकित होओगे यह बात जानकर कि वैज्ञानिक कहते हैं कि नाग के पास कान नहीं होता। इसलिए पहले तो वैज्ञानिक बहुत हैरान हुए थे यह बात जानकर कि जब मदारी अपनी तूंबी बजाता है, तो नाग फन क्यों हिलाने लगता है? क्योंकि उसके पास कान तो है ही नहीं, तो ध्वनि तो सुन ही नहीं सकता नाग। नाग तो बिलकुल बहरा है, बज बहरा, ध्वनि तो उसके भीतर पहुंच ही नहीं सकती, तो वैज्ञानिक तो बड़े हैरान थे कि मामला क्या है! तो पहले तो उन्होंने सोचा कि शायद वह मदारी जो अपना सिर हिलाता है, उसको देखकर नाग भी सिर हिलाने लगता है— क्योंकि सुन तो सकता ही नहीं है।

तो फिर उन्होंने मदारियों से तूंबी बजवायी और कहा कि सिर मत हिलाना और तूंबी मत हिलाना, लेकिन नाग ने तब भी फन हिलाए। तब खोजबीन और आगे बढ़ी। अब तथ्य समझ में आ गया है। नाग के पास कान तो नहीं हैं, लेकिन उसका पूरा शरीर इतना संवेदनशील है कि ध्वनि को पकड़ता है—पूरा शरीर। ऐसा कहो कि उसका पूरा शरीर कान का काम करता है। कान भी है तो चमड़ी ही, हड्डी और चमड़ी। तुम्हारा छोटा सा कान सुनता है, उसका पूरा शरीर सुनता है—अलग से कान की उसे जरूरत नहीं है। यह नवीनतम खोज है।

और भारत में यह अनुभव बहुत बार हुआ है कि बुद्धपुरुषों के पास, जहां आदमी नहीं पहचान पाए, वहां नाग पहचान गए। क्योंकि बुद्धपुरुषों की जो तरंग है, उनके आसपास जो विद्युत है, वह जो सूक्ष्म लहर है, वह लहर नाग का पूरा शरीर पकड़ लेता है। वह मस्त हो जाता है। वह डूब जाता है।

हिंदुओं ने इसलिए नाग की पूजा शुरू की, क्योंकि नाग अनूठा है। ऐसा कोई दूसरा पशु—पक्षी या जानवर नहीं, जैसा नाग है। उसमें कुछ खूबियां हैं। और सबसे बड़ी खूबी यह है कि बुद्धपुरुषों के पहचान की क्षमता है उसमें। जो बुद्धपुरुषों को पहचान लेता हो, उसमें कुछ न कुछ बुद्धत्व की किरण होनी चाहिए।

बुद्ध ने कहा-पागल तू इससे प्रभावित हो रहा है लेकिन यह नहीं सोचता कि मौद्गलायन तेरे पास आया मैंने उसे भेजा और तू अंधे की तरह रहा तूने देखा नहीं। ऐसी अवस्था में अग्निदत्त किंकर्तव्यविमूढ बुद्ध के सामने खड़ा रह गया। एक मन झुकने का होने लगा एक मन अकड़ने का। ब्राह्मण कैसे हक जाए क्षत्रिय के पैर में? पंडित ज्ञानी अपने को मानता शु इतने शिष्य कैसे हक जाए? लेकिन भीतर अमृत से परिचय मौत के क्षरा निस्तरंग चित्त पर कोई चीज झुकने को भी होने लगी। तब बुद्ध ने पूछा कि अग्निदत्त तेरी शिक्षा का सार क्या है? तू लोगों को क्या समझाता है? तो उसने अपना सूत्र दोहराया— तीर्थों की शरण जाओ पवित्र नद— नदियों की शरण जाओ मूर्ति— मंदिरों की शरण जाओ मुर्ति— स्मृतियों की शरण जाओ यश— विधि— विधानों की शरण जाओ ऐसे परम आनंद को उपलब्ध होओगे। बुद्ध ने कहा पागल इन शरणों से कोई कभी दुख से छुटकारा पाया है। तूने पाया? तू अपनी कह तुझे दुख से छुटकारा मिला है? तेरे जीवन में आनंद की किरण उतरी है? और कम से कम एक बार बेईमानी मत कर। मैं तेरा साक्षी तेरे सामने खड़ा हूं तूने सुख पाया है? अपने भीतर देख! और जो तुझे नहीं मिला तो तेरी शिक्षा से दूसरों को कैसे मिल जाएगा?

काश, दुनिया के बहुत से गुरु इस बात को थोड़ा देख लें अपने भीतर, तो बहुत लोगों की भटकन बच जाए।

प्रार्थना

सूफी फकीर अलहिल्लास से किसी ने पूछा कि तू इतनी प्रार्थना करता है, इतना परमात्मा को पुकारता है, तुझे कभी उत्तर मिलता है या नहीं?

उसने कहा- तुम भी पागल हो! उत्तर चाहता कौन है? मैं उसे कष्ट देना चाहता हूं? उत्तर तो मेरे प्रश्न के पहले मुझे मिल गया है।

प्रार्थना तो मेरा धन्यवाद है; मेरी मांग नहीं, मेरी वासना नहीं। उससे मुझे कुछ चाहिए थोड़े ही। उसने इतना दिया मेरे मांगने के पहले, इसका धन्यवाद है। उसके प्रसाद का स्वीकार है। दे तो वह चुका है। पहले ही, मेरे मांगने के पहले। उससे मुझे कुछ चाहिए नहीं। कोई उत्तर भी नहीं चाहिए।

क्या तुम सोचते हो, तुम्हारी प्रार्थना परमात्मा के हृदय को बदलने के लिए है? अक्सर लोग यही सोचते हैं। जब तुम मंदिर से जाते हो और कहते हो हे प्रभु, नौकरी नहीं मिलती, कि पत्नी बीमार है, कि बेटा नालायक हुआ जा रहा है, कुछ करो, तो तुम क्या कर रहे हो? तुम यह कर रहे हो कि प्रार्थना से परमात्मा का हृदय बदलने की कोशिश कर रहे हो।

नहीं; यह प्रार्थना नहीं है। वस्तुतः प्रार्थना में प्रार्थना करने वाले का हृदय बदलता है; परमात्मा का हृदय बदलने का कोई सवाल नहीं है। प्रार्थना करने में ही हृदय बदल जाता है। विवेकानंद के जीवन में उल्लेख है। विवेकानंद के पिता मरे। पिता मौजी आदमी थे। मौजी रहे होंगे, तभी विवेकानंद जैसा बेटा पैदा हो सका।

कुछ बचाया नहीं, जिंदगी भर लुटाते रहे। कमाया बहुत, मगर लुटाते रहे। जब मरे तो कर्ज छोड़ कर मरे। जो कुछ था वह कर्ज में चला गया। घर की हालत ऐसी हो गई कि खाने को भी दो रोटी जुटाना मुश्किल। विवेकानंद अपनी मां को यह कहकर चले जाते कि आज मुझे किसी के घर निमंत्रण मिला है और रास्तों पर भूखे घूमते रहते।

लौट कर आते हाथ फेरते हुए, डकार लेते हुए। कहीं कोई मित्र ने निमंत्रण दिया नहीं है। मां को बताने के लिए कि पेट भर गया है, तू फिकर मत कर, जो थोड़ा बहुत घर में है, तू अब भोजन कर ले। क्योंकि वह इतना थोड़ा होता या तो विवेकानंद कर ले या मां कर ले। मस्त तगड़े आदमी थे, काफी भोजन चाहिए पड़ता।

मां यह सोचकर कि बेटा भोजन कर आया है, भोजन कर लेती जो भी रूखा-सुखा होता। रामकृष्ण को खबर लगी तो रामकृष्ण ने एक दिन विवेकानंद को कहा कि तू पागल है! तू जा कर मंदिर में काली को क्यों नहीं कहता?

यहां-वहां क्या भटक रहा है? एक दफा जा कर देख, सब मामला हल हो जाएगा। तू जा प्रार्थना कर। अब रामकृष्ण कहे तो विवेकानंद इनकार कैसे करें? गए। घंटा-भर लग गया। बाहर रामकृष्ण बैठे हैं चबूतरे पर, राह देख रहे हैं।

जब निकले विवेकानंद गदगद, आंखों से आंसुओं की धार बह रही है, मस्ती की तरंग छाई हुई। तीन दिन के भूखे हैं, यह तो भूल ही गए हैं। बड़े आनंद-मग्न हैं। आकर रामकृष्ण के चरणों में गिर पड़े। रामकृष्ण ने कहा- दूसरी बात पीछे होगी, तूने कह दिया न? तूने प्रार्थना कर ली न?

विवेकानंद ने कहा- अरे! मैं तो भूल ही गया। मैं प्रार्थना में ऐसा मस्त हो गया!

रामकृष्ण ने कहा- फिर से जा। ऐसा तीन बार हुआ और तीसरी बार विवेकानंद बाहर आए और रामकृष्ण को देखा और कहा कि माफ करें, यह शायद हो नहीं सकेगा। जैसे ही मैं वहां जाता हूं, प्रार्थना ऐसा घेर लेती है कि छोटी-छोटी बातें करने का सवाल ही नहीं उठता। और छोटी-छोटी बातें कैसे करूं, यह बातें बेहूदी लगती है, अभद्र लगती है।

यह मुझसे नहीं हो सकेगा रामकृष्ण। परमहंसदेव, क्षमा कर दें! यह मुझसे नहीं हो सकेगा। रामकृष्ण ने छाती से लगा लिया विवेकानंद को और कहा- इसीलिए तीन बार भेजा, मैं देखना चाहता था, क्या प्रार्थना में तू कुछ मांग सकता है अब भी या नहीं?

मगर नहीं मांग सकता तो तू प्रार्थना की कला सीख गया। अब मैं निश्चित हूं। तुझे प्रार्थना आ गई। प्रार्थना मांग नहीं है, हालांकि प्रार्थना शब्द का ही अर्थ हमने मांगना कर लिया है। मांगने वाले को प्रार्थी कहते हैं। वह शब्द का अर्थ ही हमने भ्रष्ट कर लिया।

प्रार्थी का अर्थ मांगनेवाला नहीं, प्रार्थी का अर्थ झुकनेवाला है। प्रार्थना का अर्थ मांगना नहीं है, प्रार्थना का अर्थ अहोभाव है।